ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
डा० राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)-८४८ १२५

बुलेटिन संख्या-१६
दिनांक-शुक्रवार,८ मार्च,२०१६

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेद्यशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः २६.८ एवं ९.९ डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता ७४ सुबह में एवं दोपहर में ५० प्रतिशत, हवा की औसत गति ३.२ कि०मी० प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पण ३.४ मि०मी० तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन ६.८ घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा ५ से०मी० की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में १५.५ एवं दोपहर में २६.१ डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान

(९ से १३ मार्च,२०१६)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा०आर०पी०सी०ए०यू०, पूसा,समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी ९ से १३ मार्च,२०१६ तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः-

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- अधिकतम तापमान २७ से २९ डिग्री सेल्सियस के बीच रहने की संभावना है। न्यूनतम तापमान १० से १२ डिग्री सेल्सियस के आस-पास रह सकता है।
- इस अवधि में औसतन ७-१० कि०मी० प्रति घंटा की रफ्तार से पछिया हवा चल सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में ६५ से ७५ प्रतिशत तथा दोपहर में ४५ से ५५ प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- पूर्वानुमानित अवधि में मौसम के शुष्क रहने की संभावना को देखते हुए किसान भाई सरसों की कटनी, दौनी एवं सुखाने के कार्य को उच्च प्राथमिकता देकर समपन्न करें। आलू की खुदाई कर भंडारित करे। खेतों में खड़ी फसले जैसे मक्का, गेहूँ, प्याज, पिछात मटर, टमाटर, बैगन,पत्ता गोभी तथा बिगत माह बोयी गई सब्जियाँ भिन्डी, कद्दू, कदिमा, करेला एवं नेनुआँ में आवश्यकतानुसार सिंचाई करें।
- गरमा फसल की बुआई से पूर्व मिट्टी में प्रयाप्त नमी की जाँच अवश्य कर लें। नमी के अभाव में बीजो का अंकुरण प्रभावित हो सकता है फलतः पौधों की संख्या में आयी कमी होने की वजह से उपज प्रभावित होगी।
- अगात बोयी गई भिण्डी की फसल में लीफ हॉपर (जैसिड) कीट की निगरानी करें। यह हरे रंग का कीट दिखने में सुक्ष्म होता है। भिंडी की खेत में घुसते ही यह कीट भिंडी के पौधे के पास से समूह में उड़ते हुए देखा जा सकते है। इसके शिशु व प्रौढ दोनो भिण्डी की पत्तियों के निचले हिस्से में रहते है और पत्तों का रस चुसते है जिसके फलस्वरूप पत्तियाँ किनारे से पिली होकर सिकुड़ती है तथा प्यालानुमा आकार बनाकर धीरे धीरे सुखने लगती है। फलन प्रभावित होती है। इस कीट का प्रकोप दिखाई देने पर इमिडाक्लोप्रिड ०.५ मी०ली० प्रति लीटर पानी की दर से घोल बनाकर छिड़काव करें।
- विगत माह बोयी गई लत्तर वाली सब्जियों जैसे नेनुआ, करैला, लौकी (कद्दू), और खीरा की छोटे-छोटे पौधों में लाल भृंग कीट की निगरानी करें। पौधों की प्रारंभिक अवस्था जो की फरवरी-मार्च माह के दौरान आता है, इस अवधि में कीट से फसलों को काफी नुकसान होता है। इस कीट के पीठ का रंग नारंगी लाल तथा अधर भाग का रंग काला होता है। इसके शिशु फसल की जड़ को काट देते है। व्यस्क कीट बड़े पौधों की पत्तियों एवं फुलों को हानी पहुचाते है। पत्तियाँ खा लेने की वजह से पौधे की बढ़वार रुक जाती है तथा कभी-कभी पौधे सुख जाते है। गाय के गोबर की राख में थोड़ा किरासन मिलाकर पौधों पर सुबह में भुरकाव करने से इस कीट का आक्रमण कम हो जाता है। अधिक नुकसान होने पर क्लोरोपायरीफास २ प्रतिशत धूल दवा का २० किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से पौधों की जड़ों के पास मिट्टी में मिला देने से इस कीट शिशु नष्ट हो जातें है। पत्तियों पर डाइक्लोरवॉस ७६ ई०सी० का १ मि०ली० प्रति लीटर पानी की दर से छिड़काव करें।
- शुष्क मौसम एवं तापमान में वृद्धि होना थ्रिप्स कीट के लिए अनुकुल वातावरण है। प्याज में थ्रिप्स कीट की निगरानी करें। यह प्याज को नुकसान पहुँचानेवाला मुख्य कीट है। यह आकार में अतिसुक्ष्म होता है तथा पत्तियों की सतह पर चिपक कर रस चुसते है जिससे पत्तियों का ऊपरी हिस्सा टेढ़ा-मेढा हो जाता है। पत्तियों पर दाग सा दिखाई देता है जो बाद में हल्के सफेद हो जाते है। जिससे उपज में काफी कमी आती है। थ्रीप्स की संख्या फसल में अधिक पाये जाने पर प्रोफेनोफॉस ५० ई०सी० दवा का १.० मि०ली० प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का १.० मी.ली. प्रति ४ लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। प्याज की फसल में खर-पतवार निकालें। फसल में १० से १२ दिनों पर लगातार सिंचाई करें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई करें। बुआई के पूर्व २० किलोग्राम नेत्रजन, ४५ किलोग्राम स्फूर, २० किलोग्राम पोटाश तथा २० किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। **मूंग** के लिए *पूसा विशाल, सम्राट, एस०एम०एल०-६६८, एच०यू०एम०-१६ एवं सोना* तथा **उरद** के लिए *पंत उरद-१९, पंत उरद-३१, नवीन एवं उत्तरा* किस्में बुआई के लिए अनुशंसित हैं। बुआई के दो दिन पूर्व बीज को कार्बेन्डाजीम २.५ ग्राम प्रति किलो ग्राम की दर से शोधित करें। बुआई के ठीक पहले शोधित बीज को उचित राईजोबियम कल्चर से उपचारित कर बुआई करें। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु २०-२५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु ३०-३५ किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई की दूरी 30x10 से०मी० रखें।
- जो कृषक बन्धु गरमा सब्जी लगाना चाहते है वें अबिलंब बुआई करें। लौकी की अर्का बहार, काशी कोमल, काशी गंगा, पूसा समर, प्रोलिफिक लॉग, पूसा मेद्यदूत, पूसा मंजरी, पूसा नवीन किस्मों की बुआई करें। तरबूज की अर्का मानिक, दुर्गापुर मधु, सुगरबेली, अर्का ज्योती (संकर) तथा खरबूज की अर्का जीत, अर्का राजहंस, पूसा शर्बती किस्में उत्तर बिहार के लिए अनुसंशित है। नेनुआ की पूसा चिकनी, स्वर्ण प्रभा, करैला की अर्का हरित, काशी उर्वशी, पूसा विशेष, कायमबटूर लॉग की बुआई करें। खेत की जुताई में २०-२५ टन गोबर की खाद, ३० किलोग्राम नेत्रजन, ५० किलोग्राम फॉसफोरस, ४० किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें।

आज का अधिकतम तापमानः २६.४ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ३.५ डिग्री कम	आज का न्यूनतम तापमानः ८.६ डिग्री सेल्सियस, सामान्य से ४.४ डिग्री कम

(डॉ० ए. सत्तार)
नोडल पदाधिकारी